Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 13 ~ Issue 6 (June 2025) pp: 500-506
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

लैंगिक डिजिटल विभाजन : उच्च शिक्षा में अध्यनरत छात्र–छात्राओं का तुलनात्मक अध्ययन

रजनी बघेल
(समाजशास्त्र), श्री वार्ष्णेय महाविद्यालय, अलीगढ़ डॉ0 भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा

सार

डिजिटल विभाजन इंटरनेट, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के उपयोग और प्रभाव के सम्बन्ध में सामाजिक एवं आर्थिक असामनता को दर्शाता है। यह इंटरनेट और सूचना प्रौद्योगिकी तक नियमित प्रभावी पहुँच रखने वाले तथा इस तक पहुँच नहीं रखने वाले व्यक्तियों के बीच के अन्तर को संदर्भित करता है। राष्ट्रीय स्तर पर देखें तो भारत में एक चौथाई घरों तक मोबाइल नेटवर्क के माध्यम से इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध है। शहरी क्षेत्रों में 42% घरों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में सिर्फ 15% घरों में ही इंटरनेट का उपयोग किया जाता है। एन0एस0ओ0 की रिपोर्ट से स्पष्ट है कि भारत में डिजिटल विभाजन का प्रमुख कारण आर्थिक स्थिति है। डिजिटल विभाजन की स्थिति महिला एवं पुरूषों के बीच युवा एवं बुजुर्गों के बीच, अमीर एवं गरीब लोगों के बीच के साथ ही सबसे महत्वपूर्ण ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों में देखने को मिलती है। प्रस्तुत शोध पत्र में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के बीच लैंगिक आधार पर डिजिटल विभाजन की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध में पाया गया है कि इंटरनेट, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी तक छात्रों की तुलना में छात्राओं की पहुँच कम है, यह स्थिति की लैंगिक आधार पर डिजिटल विभाजन की ओर संकेत करती है।

मुख्य शब्द – उच्च शिक्षा, डिजिटल विभाजन, इंटरनेट, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी, लैंगिक डिजिटल विभाजन।

Received 15 June., 2025; Revised 27 June., 2025; Accepted 29 June., 2025 © The author(s) 2025.
*Published with open access at **www.questjournas.org***

प्रस्तावना –

डिजिटल विभाजन को डिजिटलीकरण एवं सूचना, संचार प्रौद्योगिकी तक पहुँच का अभाव या इंटरनेट तक पहुँच नहीं होने के रूप में देखा जाता है। डिजिटल विभाजन को जिनके पास इंटरनेट या वेब तक पहुँच और जिनके पास पहुँच नहीं है, के संदर्भ में उपयोग किया जाता है। जिनके पास इंटरनेट एवं डिजिटल स्त्रोतों तक पहुँच है को और जिनके पास इन स्त्रोतों का अभाव है की तुलना अधिक श्रेष्ठ माना जाता है। विश्व के संदर्भ में देखें तो भारत इंटरनेट उपयोगकर्ताओं में दूसरे स्थान पर है जो सिर्फ चीने से पीछे है।[1] भारत को उन देशों में रखा गया है जहाँ डिजिटल विभाजन की स्थिति साफ देखी जा सकती है। वैश्विक परिदृश्य में भारत इंटरनेट उपयोगकर्ताओं में दूसरा स्थान पाकर भी डिजिटल विभाजन के दौर से गुजर रहा है।[2]

डिजिटल विभाजन के लिये जिम्मेदार कारणों में मुख्यतः आवश्यक कम्प्यूटर की कमी, इंटरनेट का अभाव अथवा इंटरनेट तक पहुँच ना होना, साक्षरता का निम्न स्तर, इंटरनेट उपयोग संबंधी मूलभूत प्रशिक्षण की कमी को रखा गया है।

'डिजिटल डिवाइड' शब्द प्लैरी इरविंग ने दिया। यह शब्द 1990 के दशक के मध्य में उन लोगों के लिए प्रयोग किया गया जो इंटरनेट और दूरसंचार सूचना सेवाओं तक पहुँच रखने वाले तथा पहुँच नहीं रखने वालों के बीच अन्तर को दिखाता है।[3] इंटरनेट और सूचना संचार तक पहुँच रखने वालों का एक वर्ग तथा इंटरनेट और सूचना संचार तक पहुँच नहीं रखने वालों का दूसरा वर्ग, इन दोनों के बीच की खाई अथवा अन्तर को डिजिटल विभाजन कहा जाता है।

कम्प्यूटर आधारित क्षमताओं का उपयोग एवं लाभों हेतु सूचना, संचार एवं प्रौद्योगिकी आधारित दो वर्गों के बीच अन्तर डिजिटल विभाजन की खाई को प्रदर्शित करता है। यह ऐसा विभाजन है जो विकासशील देशों के साथ ही विभाजित देशों में भी पाया जाता है। जैसे संयुक्त राज्य अमेरिका जैसा विकसित राष्ट्र अग्रणी ज्ञान अर्थव्यवस्थाओं में से एक है लेकिन वहाँ भी डिजिटल डिवाइड की स्थिति देखने को मिलती है।

चक्रवर्ती और बौसमैन (2005) ने शोध अध्ययन में आय संबंधी असमानता के वितरण को डिजिटल विभाजन का एक प्रमुख कारण माना है। लेकिन प्रत्येक देश में डिजिटल विभाजन के कारण अलग–अलग हो सकते हैं।[4] विल्सन (2006) ने डिजिटल डिवाइड को पहुंच में असमानता के रूप में वर्णित किया है। डिजिटल डिवाइड की समस्या के भौगोलिक, जनसांख्यिकीय के साथ ही सामाजिक–आर्थिक पहलु भी हैं। डिजिटल डिवाइड इंटरनेट के साथ ही सामाजिक–आर्थिक पहलु भी है। डिजिटल डिवाइड इंटरनेट तक पहुँच के असमान पैटर्न को संदर्भित करता है।[5] राष्ट्रीय सांख्यिकी संगठन (National Statistical Organization) ने हाल में भारत में डिजिटल डिवाइड संबंधी रिपोर्ट में बताया कि लगभग एक चौथाई घरों तक ही इंटरनेट की पहुँच है नगरीय क्षेत्रों में 42% घरों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में सिर्फ 15% घर ही इंटरनेट से जुडे हैं। भारत में डिजिटल डिवाइड का प्रमुख कारण कमजोर, आर्थिक स्थिति पाया गया है। एन0एस0ओ0 की रिपोर्ट से स्पष्ट है कि 5 वर्ष से 14 वर्ष की आयु में 20% भारतीयों में बुनियादी डिजिटल साक्षरता है जबकि 15–29 वर्ष आयु समूह के 40% लोग डिजिटल साक्षर है।[6]

उद्देश्य – प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्र–छात्राओं की लैंगिक डिजिटल विभाजन में स्थिति जानना।

शोध पद्धति –

प्रस्तुत शोध अध्ययन वर्णनात्मक प्रवृत्ति का है। यह अध्ययन छात्र–छात्राओं के बीच तुलनात्मक विश्लेषण पर आधारित है। प्रस्तुत शोध में राजा महेन्द्र प्रताप सिंह राज्य विश्वविद्यालय, अलीगढ से सम्बद्ध तीन एडेड डिग्री कॉलेजों (टीकाराम कन्या महाविद्यालय, धर्मसमाज महाविद्यालय, श्री वार्ष्णेय महाविद्यालय) का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन द्वारा किया गया। इन कॉलेजों के विभिनन संकाय (कला, विज्ञान, वाणिज्य, विधि एवं शिक्षक–शिक्षा) के 140 विद्यार्थियों का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन के माध्यम से किया। शोधकर्ता द्वारा शोध के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए स्वनिर्मित प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया।

आंकड़ों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण –

तालिका नं0–1 : उत्तरदाताओं का लिंग एवं निवास स्थान आधारित वर्गीकरण

		संख्या	प्रतिशत (%)
लिंग	छात्र	70	50%
	छात्रायें	70	50%
निवासी	ग्रामीण	81	57.85%

	नगरीय	59	42.14%

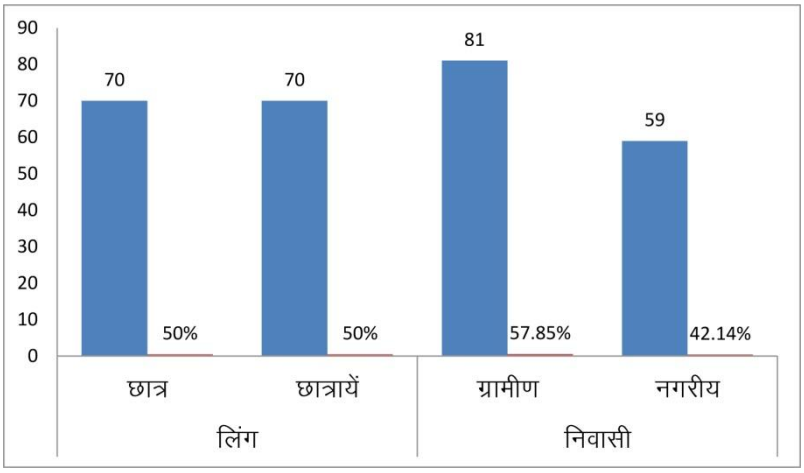

लेखा चित्र–1 : उत्तरदाताओं का लिंग एवं निवास स्थान आधारित वर्गीकरण

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि शोध अध्ययन में शामिल उत्तरदाताओं में 50% छात्र तथा 50% छात्रायें थीं। शोध में 57.85% ग्रामीण उत्तरदाता तथा 42.14% नगरीय उत्तरदाता सम्मिलित हुए।

तालिका नं0–2 : उत्तरदाताओं का आयु आधारित वर्गीकरण

आयु (वर्षों में)	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत (%)
18	07	05%
19	25	17.85%
20	31	22.14%
21	33	23.57%
22	25	17.87%
23	14	10%
24	03	03.57%
कुल उत्तरदाता	**140**	**100%**

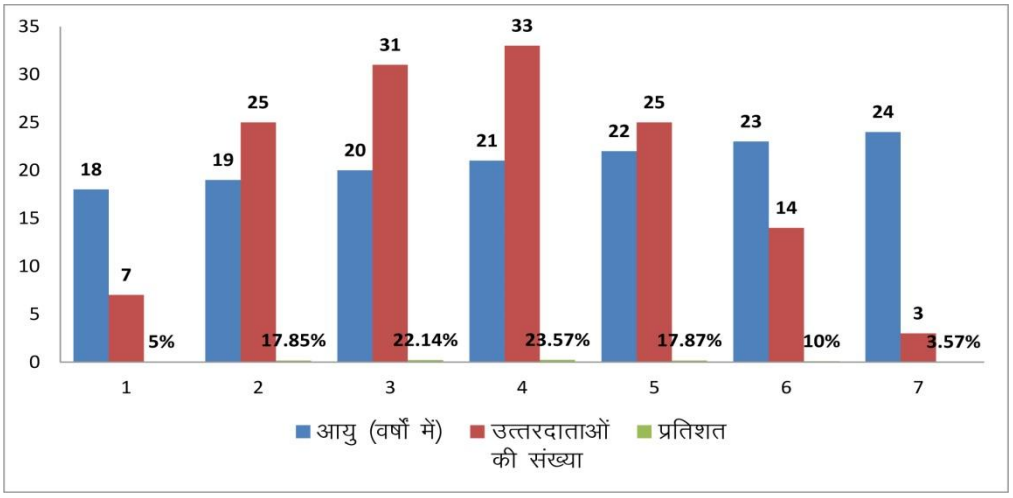

लेखा चित्र–2 : उत्तरदाताओं का आयु आधारित वर्गीकरण

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि अध्ययन में शामिल सभी उत्तरदाताओं की आयु 18–24 वर्ष के बीच है। जिसमें 18 वर्ष के केवल 5% उत्तरदाता, 19 वर्ष के 17.85% उत्तरदाता, 20 वर्ष के 22.14% उत्तरदाता, 21 वर्ष के 23.57% उत्तरदाता, 22 वर्ष के 17.87% उत्तरदाता तथा 23 और 24 वर्ष के क्रमशः 10% तथा 03.57% उत्तरदाता शोध अध्ययन में सम्मिलित हुए।

तालिका नं0–3 : उत्तरदताओं का संकाय आधारित वर्गीकरण

संकाय (कक्षा)	संख्या	प्रतिशत (%)
कला (बी0ए0)	41	29.28%
विज्ञान (बीएस0सी0)	32	22.85%
वाणिज्य (बी0कॉम0)	31	22.14%
शिक्षक–शिक्षा विभाग (बी0एड0)	18	12.85%
विधि (एल0एल0बी0)	18	12.85%
कुल उत्तरदाता	**140**	**100%**

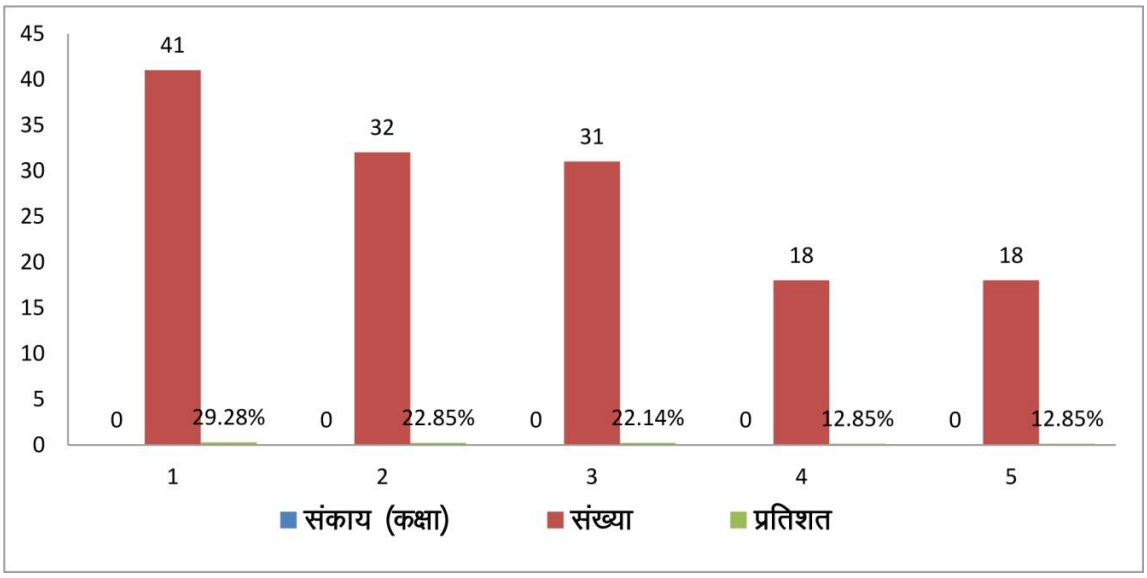

लेखा चित्र–3 : उत्तरदताओं का संकाय आधारित वर्गीकरण

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि संकाय आधारित वर्गीकरण में कला संकाय में सर्वाधिक 29.26% उत्तरदाता है। विज्ञान संकाय के 22.85%, वाणिज्य संकाय के 22.14%, शिक्षक–शिक्षा विभाग के 12.85% तथा विधि (लॉ) संकाय के 12.85% उत्तरदाता अध्ययन में सम्मिलित हुए।

तालिका नं0–4 : इंटरनेट उपयोग करने वाले उपकरणों तक पहुँच के संबंध में छात्र–छात्राओं का तुलनात्मक वर्गीकरण

	लिंग	संख्या	प्रतिशत (%)
कम्प्यूटर	छात्र	18 / 140	12.85%
	छात्रायें	05 / 140	03.57%
लैपटॉप	छात्र	20 / 140	14.28%
	छात्रायें	06 / 140	04.28%
टैबलेट	छात्र	26 / 140	18.57%
	छात्रायें	09 / 140	06.42%

स्मार्टफोन	छात्र	135 / 140	96.42%
	छात्रायें	129 / 140	92.14%

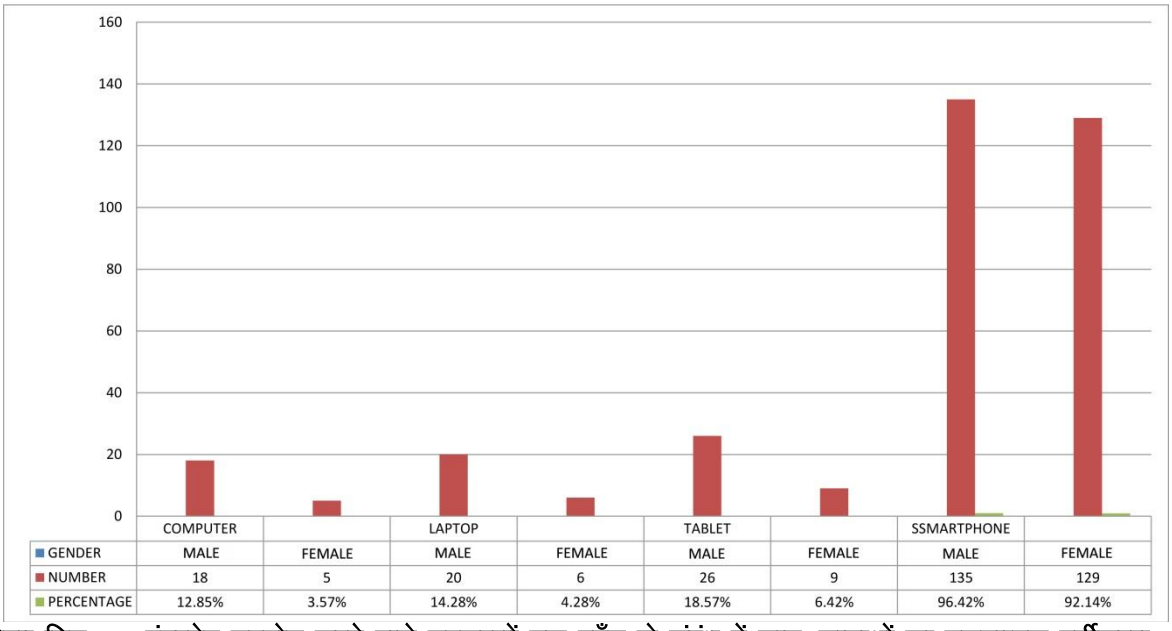

लेखा चित्र–4 : इंटरनेट उपयोग करने वाले उपकरणों तक पहुँच के संबंध में छात्र–छात्राओं का तुलनात्मक वर्गीकरण

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि इंटरनेट उपयोग करने वाले उपकरणों तक पहुँच अथवा इंटरनेट तक पहुँच रखने के संबंध में छात्र–छात्राओं की संख्या में पर्याप्त अन्तर पाया गया। कम्प्यूटर तक पहुंच रखने वाले उत्तरदाताओं में छात्रों 12. 85% की तुलना में छात्राओं सिर्फ 03.57% थी। लैपटॉप के माध्यम से इंटरनेट तक पहुँच रखने वाले छात्र 14.28% की तुलना में छात्राऐं केवल 4.28% थी। छात्रों 18.57% तथा छात्राओं 6.42% ने टैबलेट के माध्यम से इंटरनेट तक पहुँच बनायी। स्मार्टफोन के माध्यम से इंटरनेट तक पहुंच बनाने वाले छात्र 96.42% तथा छात्राऐं 92.14% थी। सर्वाधिक उत्तरदाताओं ने स्मार्टफोन के माध्यम से इंटरनेट का उपयोग किया। प्रस्तुत आंकड़ों से स्पष्ट है कि छात्रों की तुलना में छात्राओं की इंटरनेट तक पहुँच कम है यह स्थिति की लैंगिक डिजिटल विभाजन की ओर संकेत करती है।

तालिका नं0–5 : इंटरनेट उपयोग करने के उद्देश्य संबंधी विवरण

इंटरनेट उपयोग के उद्देश्य	लिंग	संख्या	प्रतिशत (%)
शैक्षिक कार्यों के लिए	छात्र	130 / 140	92.85%
	छात्रायें	120 / 140	85.71%
सोशल नेटवर्किंग साइट्स के लिए (फेसबुक, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, ट्विटर आदि)	छात्र	133 / 140	95%
	छात्रायें	139 / 140	91.42%
मनोरंजन हेतु (ऑडियो–वीडियो देखने के लिए)	छात्र	128 / 140	99.28%
	छात्रायें	128 / 140	91.42%
विभिन्न सूचनायें खोजने के लिए	छात्र	122 / 140	87.14%
	छात्रायें	97 / 140	69.28%
कैरियर संबंधी जानकारी अथवा नौकरी खोजने के लिए	छात्र	90 / 140	64.28%
	छात्रायें	51 / 140	36.42%

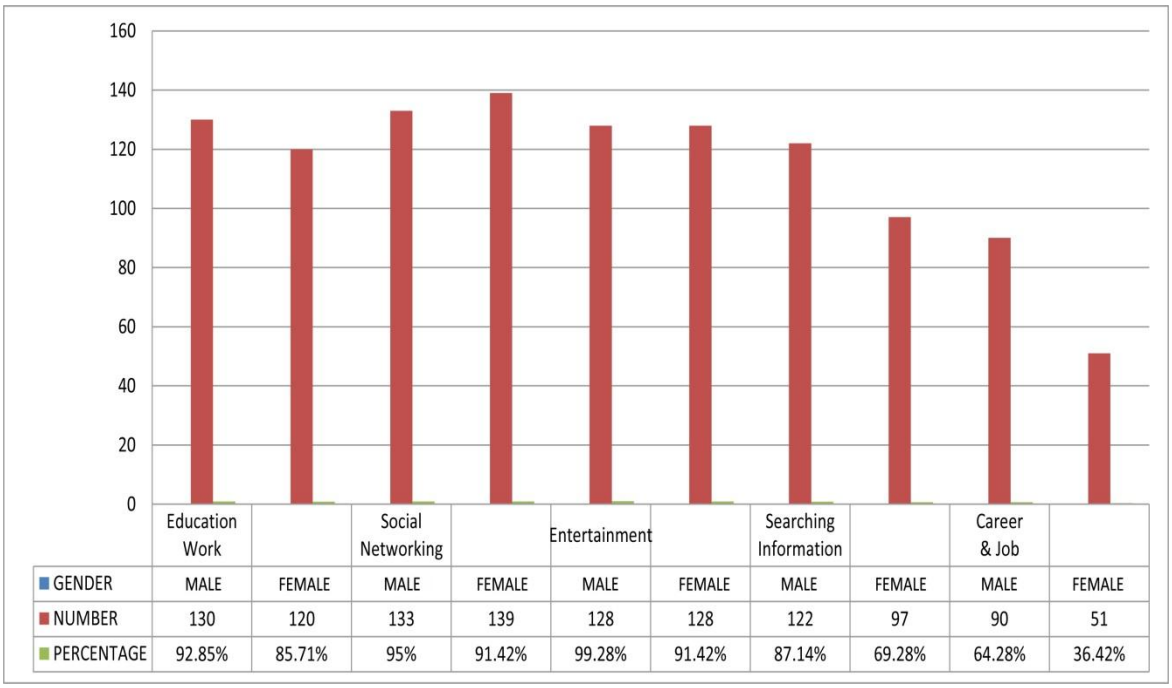

	Education Work		Social Networking		Entertainment		Searching Information		Career & Job	
GENDER	MALE	FEMALE	MALE	FEMALE	MALE	FEMALE	MALE	FEMALE	MALE	FEMALE
NUMBER	130	120	133	139	128	128	122	97	90	51
PERCENTAGE	92.85%	85.71%	95%	91.42%	99.28%	91.42%	87.14%	69.28%	64.28%	36.42%

लेखा चित्र–5 : इंटरनेट उपयोग करने के उद्देश्य संबंधी विवरण

तालिका नं0–5 संबंधी आंकड़ों से स्पष्ट है कि शोध अध्ययन में 92.85% छात्रों तथा 85.71% छात्राओं ने शैक्षिक कार्यों के लिए इंटरनेट का उपयोग किया। 95% छात्र तथा 91.42% छात्राओं ने सोशन नेटवर्किंग साइट्स पर सक्रिय रहने के लिए इंटरनेट का उपयोग किया। 99.28% छात्र तथा 91.42% छात्राओं ने मनोरंजन के लिए इंटरनेट का उपयोग किया। विभिन्न सूचनायें खोजने के लिए छात्र 87.14% तथा छात्राएं 69.28% ने इंटरनेट का उपयोग किया। इसके साथ ही कैरियर की जानकारी या नौकरी खोजने के लिए छात्र 64.28% तथा छात्राऐं 86.42% ने इंटरनेट का उपयोग किया।

निष्कर्ष –

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी तक लोगों की असमान पहुँच की स्थिति न केवल विकासशील देशों में अपितु विकसित देशों में भी देखने को मिलती है। भारत में डिजिटल विभाजन की स्थिति कई क्षेत्रों में देखने को मिलती है पहला ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों के संदर्भ में देखें तो ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल विभाजन की खाई अधिक गहरी है। दूसरा महिलाओं की तुलना में पुरुषों द्वारा इंटरनेट का अधिक उपयोग किया जाता है यह अन्तर लैंगिक आधार पर डिजिटल विभाजन को दिखाता है।

प्रस्तुत शोध में उत्तरदाताओं के रूप में छात्र–छात्राओं की संख्या बराबर थी। इसके साथ ही सभी उत्तरदाता 18–24 आयु के बीच के थे। संकाय आधारित उत्तरदाताओं की संख्या में कला संकाय के सर्वाधिक उत्तरादाता शोध में सम्मिलित हुए। प्रस्तुत शोध अध्ययन में आंकड़ों का विश्लेषण करने पर पाया गया कि सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी तक पहुँच अथवा इंटरनेट उपयोग करने वाले उपकरणों तक पहुँच रखने के संबंध में छात्रों में तुलना में छात्राओं की इंटरनेट तक पहुंच कम है, यह स्थिति भी लैंगिक डिजिटल विभाजन की ओर संकेत करते हैं। कम्प्यूटर, टैबलेट, लैपटॉप एवं स्मार्टफोन तक छात्रों की तुलना छात्राओं की कम पहुँच थी। शोध अध्ययन में सर्वाधिक उत्तरदाताओं ने मनोरंजन हेतु इंटरनेट का उपयोग किया, इसके बाद शैक्षिक कार्यों हेतु इंटरनेट का उपयोग किया गया। अधिकांश उत्तरदाताओं ने

सोशन नेटवर्किंग साइट्स के उपयोग हेतु इंटरनेट का उपयोग किया। जिसमें इंटरनेट उपयोग के उद्देश्यों हेतु भी छात्रों की तुलना में छात्राओं की कम इंटरनेट तक कम पहुँच है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

[1]. https://www.statista.com/Statistics/262966/Number of Internet-user-in selected countries.published by Joseph Johnson March 24, 2022 (Accessed on April 10, 2023)

[2]. https://www.statista.com/statistics/792074/India-Internet-penetration. rate/published by Tanu Shri Basuray (Accessed on April 10, 2023)

[3]. https://www.oxfordbibiographics.com-transalte.goog/display/document/ obo (Accessed on April 11, 2023)

[4]. Chakraborty, J & Bosman, M.M. (2005). Measuring the digital divide in the United States : Race, Income and Personal computer ownership. The professional Geographer, 57 (3) 345-410.

[5]. Wilson, E. (2009). The information Revolution and Developing Countries, Perspectives on Politics 4(02)

[6]. DOJ: 10.1017/5153759270661027X

[7]. https://data.gov.in/dataset-group-nine/national-statistics-organization Report 2020-21.